"जागनी के ब्रह्माण्ड का वर्तमान समय"

—प्रमोद किरण सेठी (दिल्ली)

परम आदरणीय सुन्दर साथ जी,

जैसा कि हम सब जानते हैं कि आज जागनी का ब्रह्माण्ड है और उस जागनी के ब्रह्माण्ड का अब आखिरी वक्त आ गया है। अब हम सबके मुख से एक ही बात निकलती है कि अब 'श्री राज जी महाराज' को खेल समाप्त कर देना चाहिए। अब इस माया से दिल भर गया है। लेकिन ये बात हम तभी कहते हैं जब हमारे वजूदों पर संकट आते हैं, जब माया में हम बुरी तरह उलझ जाते हैं तो हम उसी समय ये कहते हैं कि हे धनी हमने माया का खेल आपसे मागा है। हम अपनी भूल स्वीकार करते हैं अब हम आपसे अपने घर चलने की प्रार्थना करते हैं। अब हमने माया देख ली है अब और नहीं देखी जाती। लेकिन ये सब बातें हम तभी तक कहते हैं जब तक संकट रहता है और जब संकट टल जाता है तो फिर से इसी माया में लीन हो जाते हैं। आज जब कि 'श्री राज जी महाराज' ने हम सबको वाणी द्वारा पूरी पूरी सुध दी है। इसके अलावा श्री राज जी महाराज की शक्ति (जो अब भी हमारे बीच में है) द्वारा भी हमें अपने घर की सुध मिल चुकी है फिर भी हम गफलत में डूबे हुए हैं। जैसे १– हमें अपने घर की सुध मिलती जा रही है या २– हमारे ऊपर श्री राज जी महाराज की मेहर होती जा रही है हम और ज्यादा माया में डूबते जा रहे हैं। न जाने हमें क्या होता जा रहा है कि हम चाहते हुए भी माया से निकल नहीं पा रहे हैं। श्री राज जी महाराज भी चुपचाप बैठे हुए देख रहे हैं कि वहां से अपने इश्क को बड़ा बताने वाली व आपस में एक दूसरे को याद दिलाने वाली मेरी अँगनायें आज माया में किस कदर उलझी हुई हैं।

आदरणीय सुन्दर साथ जी दुख तो तब बहुत होता है जबकि हम सब सुन्दर साथ जी आपस में मिलते भी हैं तो ऐसे जैसे कि हमारा कोई नाता ही न हो। हम आपस में भी सिर्फ औपचारिकता ही निभाते हैं। वजूदों के रिश्तों को ही अपना सर्वस्व मान बैठे हैं। आत्मा को भुला ही बैठे हैं।

प्यारे साथ जी जिनको देखने के लिए आंखें तरस जाया करती थी। सोचते थे

Nijanand App

कि कब हमारे प्यारे साथ जी के दर्शन हों और हम अपना हाले दिल उनको सुनायें व अपने प्रियतम को याद करें लेकिन आज न जाने हम सबको क्या हो गया है। आज हम अपने अहंकार में डूबे हुए हैं। यदि खुदा की मेहर से हमें कोई गुण मिला भी है तो हमारे अन्दर अहं भर जाता है हम उसका प्रयोग गलत तरीके से करना शुरू कर देते हैं। और हमारी वाणी में ये बात साफ साफ लिखी हुई है कि जहां अहं होता है तहां खुदा नहीं होता और जहां उनकी नजरें करम होती हैं वहां अहं नहीं होता। यदि सब कुछ समझकर भी हमारे अन्दर से अहं नहीं जाता तो हमारा सब कुछ सुनना व समझना बेकार है। इससे साफ पता चलता है कि हमने अपनी वाणी से कुछ ग्रहण नहीं किया। यदि श्री राज जी महाराज अपना कार्य करवाने के लिए किसी तन को शोभा भी देते हैं तो हम बजाय सुन्दर साथ जी से प्रेम करने के अपने आपको ही ऊँचा समझने लगते हैं।

आदरणीय सुन्दर साथ जी सुध आने पर भी हम गफलत में डूबते जा रहे व उन वजूदों की जय-जयकार चाहते हैं जिसको एक दिन नष्ट हो जाना है। सब कुछ समझते भी हैं कि हमारा नाता आत्मा का है न कि शरीर का लेकिन फिर भी वजूद की शोभा चाहते हैं। आत्मा के नाते को भुला ही बैठे हैं कभी कभी तो आत्मा ये हाल देख कर चीत्कार कर उठती है और खुदा से एक ही प्रार्थना करती है कि हे खुदा अपने बन्दों को समझने की शक्ति दो व हमारी खता को क्षमा कर दो आज चारो ओर ऐसा वातावरण बन गया है कि आत्मा एक ही पुकार करती है कि ओ मेरे प्यारे पिया अब आप एक क्षण की भी देरी किये बिना अपने घर चलो। अब इस दुनियां से जी भर गया है।

अन्त में मैं आपसे प्रार्थना करती हूं कि अब जबकि हमारे धाम चलने का समय आ गया है अब तो हम अपने अहं को त्याग कर अपने वजूदों की महत्ता को छोड़ कर अपनी आत्मा की आवाज पहचाने जो अपने वतन को जाने के लिए बेताब हो रही है। और जब तक धनी को हमें इस माया में रखना है वो समय हम आपस में प्रेम पूर्वक बिताएँ व मिलकर 'धनी' से घर चलने की अर्ज करें। अब मैं यहां अपनी बात समाप्त करते हुए आप सबसे अपनी त्रुटियों के लिए क्षमा चाहूंगी।

Nijanand App